4. इबादत (उपासना/दासत्व)

पहले से चर्चा किए गए अन्य दो मूल शब्दों की तरह, 'इबादत' शब्द के भी कई अलग-अलग अर्थ हैं, हालांकि सभी एक-दूसरे से संबंधित हैं। मूल शब्द 'अब्द' द्वारा निहित मूल अवधारणा यह है कि स्वयं के अलावा किसी और को सर्वोच्चता धारण करने वाला या प्रभुत्व का आनंद लेने वाला स्वीकार करना और उसके पक्ष में अपनी स्वतंत्रता और स्वाधीनता का त्याग करना, उसके प्रति किसी भी प्रतिरोध या अवज्ञा को त्यागना, और अपने आप को पूरी तरह से उसके अधिकार के प्रति समर्पित करना। चूंकि दासता या बंधन भी समान स्थिति के बराबर हैं, इसलिए यह शब्द किसी भी अरब के मन में जो पहला अर्थ पहुंचाता है वह इसी कारक का है, अर्थात् दासता या बंधन। साथ ही, चूंकि एक दास की प्राथमिक भूमिका अपने स्वामी का पालन करना और उसकी इच्छाओं को पूरा करना है, इसलिए यह शब्द समर्पण और आज्ञाकारिता का अर्थ भी रखता है। इसके बाद, एक दास न केवल शारीरिक रूप से अपने स्वामी की इच्छा के प्रति समर्पित होता है, बल्कि मानसिक रूप से भी वह उसकी सर्वोच्चता को स्वीकार करता है, और यदि वह साथ ही साथ उसकी दयालुता और एहसानों के लिए कृतज्ञता की भावना रखता है, तो वह स्वतः ही स्वामी की प्रशंसा करने और उसके प्रति सम्मान और आदर दिखाने में अपने रास्ते से हटने के लिए इच्छुक हो जाता है। वह अपनी गहरी आसक्ति दिखाने के लिए कई तरीकों से अपने दायित्व को व्यक्त और प्रदर्शित करता है, एक तरीके से जो लगभग पूजा के बराबर है, हालांकि स्पष्ट रूप से, यह केवल तभी सामने आता है जब शारीरिक बंधन के साथ-साथ मानसिक लगाव भी हो। दो अन्य अर्थ भी हैं जिनमें शब्द या इसके व्युत्पन्नों का उपयोग किया जाता है, लेकिन वे गौण हैं, और इसलिए इस स्तर पर उन पर जाना आवश्यक नहीं है।

शब्द का कुरानिक उपयोग

कुरान का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि यह शब्द पूरी तरह से ऊपर बताए गए तीन अर्थों में उपयोग किया गया है, सिवाय इसके कि कभी-कभी पहला और दूसरा दोनों अर्थ निहित होते हैं, दूसरों पर केवल दूसरा, फिर भी दूसरों पर केवल तीसरा और, फिर भी अन्य स्थानों पर, तीनों। यहाँ पहले और दूसरे अर्थों में उपयोग के उदाहरण हैं:

(i) फिर हमने मूसा और उनके भाई हारून को, उनकी नबूवत के स्पष्ट प्रमाणों के साथ फिरौन और उसके सरदारों के पास भेजा, लेकिन उन्होंने शक्ति से पैदा हुए अहंकार के कारण उनके साथ तिरस्कार का व्यवहार किया। उन्होंने कहा, "क्या हम अपने जैसे दो मात्र मनुष्यों पर विश्वास करें, और वह भी एक ऐसी जाति के जो हमारे लिए दासता में है?" (कुरान 23:45-47)

(ii) और फिरौन ने मूसा को बचपन से उन्हें पालने की याद दिलाई, (जिसके लिए मूसा ने उत्तर दिया): "जिस दायित्व की आप मुझे याद दिलाते हैं, क्या यह तथ्य नहीं है कि वह केवल इसलिए हुआ क्योंकि आपने बनी इसराइल को अपना दास बनाया था (लेकिन उस तथ्य के लिए मैं कभी आपके घर में नहीं आ सकता था)?" (कुरान 26:18-23)

दोनों आयतों में क्रमशः उपयोग किए गए 'आबिदून' और 'अब्बद्ता' शब्द बंधन, समर्पण और आज्ञाकारिता को दर्शाते हैं। जब फिरौन ने हज़रत मूसा और हज़रत हारून की जाति के संबंध में पहला शब्द इस्तेमाल किया, तो उसका मतलब यह था कि बनी इसराइल मिस्रियों के दासत्व में थे और पूरी तरह से उनके अधीन थे। और, जब हज़रत मूसा (उन पर शांति हो) ने फिरौन को उत्तर में दूसरा शब्द इस्तेमाल किया, तो उनका मतलब यह था कि बाद वाले ने बनी इसराइल को गुलाम बनाया था और उन्हें अपनी आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर किया था।

(iii) हे वे लोगो जो विश्वास करते हो! उन स्वच्छ और अच्छी चीजों को खाओ जो हमने तुम्हें प्रदान की हैं, और अल्लाह के प्रति उचित कृतज्ञता व्यक्त करो, यदि तुम वास्तव में केवल उसे ही 'इबादत' देते हो। (कुरान 2:172)

इस आयत की पृष्ठभूमि यह है कि इस्लाम-पूर्व काल में, अरब लोग खाने-पीने के मामले में अपने ऊपर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगाते थे, अपने पुजारियों के आदेश के सम्मान में या अंधविश्वासों के कारण, जो उनके पूर्वजों से चले आ रहे थे। हालाँकि, जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया, तो कुरान ने मांग की कि यदि वे अब वास्तव में महसूस करते हैं कि वे केवल अल्लाह को ही 'इबादत' देते हैं, तो उन्हें उन

सभी प्रतिबंधों को भूल जाना चाहिए, और इस्लाम द्वारा अनुमत सभी चीजों को बिना किसी हिचकिचाहट के खाना चाहिए। विचार, स्पष्ट रूप से, यह है कि यदि उन्होंने अब वास्तव में अपनी इच्छा को अल्लाह की इच्छा के सामने समर्पित कर दिया है, तो उन्हें अपने पुजारियों या पूर्वजों द्वारा लगाए गए सभी वर्जनाओं को त्याग देना चाहिए, और इसके बजाय खाने-पीने के मामले में केवल इस्लामी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए।

(iv) कहो (हे नबी): क्या मैं तुम्हें इससे भी बदतर भाग्य के बारे में बताऊं? यह उन लोगों का भाग्य है जिन्हें अल्लाह ने अपने अभिशाप के तहत रखा, जिन्होंने अपने ऊपर उसका क्रोध खींचा, और जिनमें से कई बंदर और सूअर में बदल गए, और जिन्होंने तागूत को 'इबादत' दी। (कुरान 5:60)

(v) और हमने सभी लोगों के लिए नबी भेजे (उन्हें सिखाने के लिए) कि वे अल्लाह को अपनी 'इबादत' दें और तागूत को नहीं। ... (कुरान 16:36)

(vi) और उन लोगों के लिए अच्छी खबर है जिन्होंने तागूत की 'इबादत' छोड़ दी और इसके बजाय अल्लाह को अपनाया। (कुरान 39:17)

इन तीनों आयतों में, तागूत की 'इबादत' का अर्थ है उस सब के प्रति बंधन जो बाद वाला शब्द दर्शाता है, अर्थात्, प्रत्येक राज्य या अधिकार या नेतृत्व आदि, जो अल्लाह के खिलाफ उल्लंघन में, अपने शब्द को भूमि में प्रचलित करता है, चाहे बल या धमकी के उपयोग से या प्रलोभन आदि के माध्यम से। और कुरान के अनुसार ऐसे सभी अधिकार के आदेशों के सामने समर्पित होना और उसकी आज्ञा का पालन करना तागूत की 'इबादत' से कम नहीं है। [मिस्र में नासिर और पाकिस्तान में भुट्टो, तागूतडोम के हालिया चमकदार उदाहरण थे। कहीं और पहले अन्य रहे हैं, और समकालीन रूप से कई अन्य अल्लाह के खिलाफ अपने शब्द को प्रचलित कर रहे हैं और व्यक्तित्व या धर्मनिरपेक्ष पंथों को बेहतर विकल्प के रूप में आह्वान कर रहे हैं, भूल जाते हैं कि, उन्हें एक दिन अल्लाह को सभी सांसारिक अधिकार से रहित होकर हिसाब देना होगा, वास्तव में उनके परीक्षण के लिए उसकी ओर से एक अनुग्रह। अबू असद]

अब हम कुछ आयतों पर आते हैं जिनमें शब्द का उपयोग केवल दूसरे अर्थ में किया गया है, अर्थात् समर्पण या आज्ञाकारिता:

(i) हे आदम की संतानो, क्या मैंने तुम पर यह आदेश नहीं दिया था कि तुम शैतान को इबादत न दो, क्योंकि वह तुम्हारा प्रतिज्ञाबद्ध दुश्मन है? (कुरान 36:60)

जैसा कि हर कोई जानता है, कोई भी वास्तव में औपचारिक अर्थ में शैतान की पूजा नहीं करता है, और वास्तव में वह पूरी दुनिया द्वारा शापित है, और इसलिए उपरोक्त आरोप, जो न्याय के दिन मानव जाति पर लगाया जाएगा, इसका मतलब है कि जिन लोगों ने शैतान के आदेशों का पालन किया और खुद को उसके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर गुमराह होने दिया, उन्होंने वास्तव में प्रभाव में उसे अपनी 'इबादत' दी।

(ii) (और जब न्याय का दिन होगा, अल्लाह कहेगा): "सभी अन्यायियों और उनके साथियों को एक साथ इकट्ठा करो, साथ ही अल्लाह के अलावा अन्य देवताओं को भी जिन्हें उन्होंने अपनी 'इबादत' दी और उन्हें नरक के दरवाजे पर दिखाओ ..." और वे एक-दूसरे की ओर विवाद में मुड़ेंगे। उपासक कहेंगे, "यह तुम थे जो शक्ति और अधिकार के दाहिने हाथ से हमारे पास आते थे!" उपासना किए गए लोग उत्तर देंगे, "नहीं, (अब तुम हमें दोष दे रहे हो) लेकिन क्या यह नहीं है कि तुम्हारे पास स्वयं विश्वास नहीं था और तुम (अल्लाह के प्रति) हठी विद्रोह में थे।" (कुरान 37:22,23,27-30)

यदि हम उन लोगों के बीच आरोप और प्रत्यारोप पर चिंतन करें जिन्होंने अपनी 'इबादत' दी और जिन्हें यह दी गई, तो हम पाते हैं कि बाद वाले यहां कोई देवता या मूर्तियां नहीं हैं बल्कि वे धार्मिक या अन्य "लोकप्रिय" नेता हैं जो लोगों के पास शुभचिंतकों या राष्ट्र के उद्धारकर्ताओं या मुक्तिदाताओं आदि के वेश में आए और उन्हें गलत रास्ते पर ले गए। संदर्भ उन लोगों का है जो पवित्र हवाएं पहनते हैं, और, दोस्त होने का दावा करते हुए, भूमि में उपद्रव करते हैं। ऐसे लोगों के प्रति अंध आज्ञाकारिता ही यहां 'इबादत' के रूप में चित्रित की गई है।

(iii) उन्होंने (यहूदियों और ईसाइयों ने) अल्लाह के बजाय अपने विद्वानों और पुजारियों को अपना रब बनाया, और मरियम के पुत्र ईसा को भी, हालांकि उन्हें केवल अल्लाह को ही अपनी 'इबादत' देने का आदेश दिया गया था। (कुरान 9:31)

यहां विद्वानों और पुजारियों को रब बनाना और उन्हें 'इबादत' देना इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें देवता मानना, बल्कि उन्हें यह तय करने के लिए एकमात्र प्राधिकरण बनाना कि क्या करना है और क्या नहीं करना है, और उनके आदेशों का पालन करना बिना उनके पीछे किसी दिव्य या पैगंबर की मंजूरी की तलाश की परवाह किए बिना। यह वह व्याख्या है, जो पवित्र पैगंबर ने स्वयं (उन पर शांति हो) दी थी जब एक अवसर पर, यह प्रश्न उनके सामने रखा गया था, जो पहले ईसाई था एक धर्मान्तरित द्वारा।

तीसरे अर्थ के रूप में, पूजा, इसके दो पहलू हैं: पहला है व्यक्ति या वस्तु के समक्ष झुकना, छाती के पार हाथ बांधकर उसकी या उसकी उपस्थिति में खड़े होना, उसके सामने बलिदान चढ़ाना आदि जैसे पूजा के विभिन्न संस्कारों में से एक या अधिक का प्रदर्शन करना, इस बात की परवाह किए बिना कि व्यक्ति आदि अपने अधिकार में देवता माना जाता है या एक प्रमुख देवता के साथ मध्यस्थता करने में सक्षम या उस देवता के नियंत्रण में ब्रह्मांड चलाने में हिस्सा होने के रूप में। दूसरा है व्यक्ति आदि में, कारण और प्रभाव के क्षेत्र पर नियंत्रण होने में विश्वास करना, और उससे प्रार्थना करना, संकट या परीक्षा के समय में उसे आह्वान करना, और खतरे या आपदा के खिलाफ उसकी सुरक्षा की तलाश करना। कुरान के अनुसार दोनों प्रकार के कार्य पूजा के बराबर हैं, जैसे,

(i) कहो, (हे नबी): 'मुझे उन लोगों की पूजा करने से मना किया गया है जिन्हें तुम लोग अल्लाह के अलावा पूजते हो अब जबकि मेरे पास मेरे रब से स्पष्ट मार्गदर्शन है।" (कुरान 40:66)

(ii) (और इब्राहीम ने अपने लोगों से कहा): "और मैं तुमसे अलग होता हूं और तुमसे (सभी से) और उन लोगों से दूर हो जाता हूं जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो, और मैं इसके बजाय अपने रब को पुकारूंगा" और जब वह उनसे और उन लोगों से दूर हो गया जिन्हें वे अल्लाह के अलावा पूजते थे, हमने उसे एक पुत्र इशाक़ (इसहाक) से आशीर्वाद दिया। (कुरान 19:48-49)

(iii) और उस व्यक्ति से अधिक भटका हुआ कौन है जो अल्लाह के अलावा उन लोगों को पुकारता है जो कयामत के दिन तक उसे कोई जवाब नहीं देंगे और जो वास्तव में पुकारे जाने से भी अनजान हैं; और जब लोग न्याय के दिन इकट्ठे होंगे, तो जिन्हें ऐसे पुकारा गया था वे उनके प्रति शत्रुतापूर्ण हो जाएंगे और उनकी पूजा के कार्यों को अस्वीकार करेंगे। (कुरान 46:5-6)

इन तीनों आयतों में, कुरान स्वयं स्पष्ट करता है कि यहां 'इबादत' से मतलब है अनुमानित देवताओं को पुकारना या मदद के लिए उन्हें आह्वान करना।

(iv) दूसरी ओर, वे जिन्नों की पूजा करते थे, और कई लोग उन पर विश्वास करते थे। (कुरान 34:41)

जिन्नों (जिन्न) की यह पूजा बाद में इस प्रकार समझाई गई है:

(v) और मनुष्यों में से कुछ ऐसे हैं जो जिन्नों में से कुछ की सुरक्षा की तलाश करते हैं। (कुरान 72:6)

दूसरे शब्दों में, जिन्नों की सुरक्षा की तलाश करना उन्हें पूजा देने के बराबर है और यह विश्वास करना कि उनके पास ऐसी सुरक्षा प्रदान करने की शक्ति है।

(v) जिस दिन अल्लाह उन्हें और उन देवताओं को इकट्ठा करेगा जिन्हें वे उसके अलावा पूजते थे, वह बाद वालों से पूछेगा कि क्या यह वे थे जिन्होंने लोगों को गुमराह किया था या यह लोग थे जो खुद भटक गए थे। और वे जवाब देंगे "आपको महिमा! हमारे लिए आपके अलावा दूसरों को रक्षकों के रूप में लेना कैसे उचित हो सकता था?" (कुरान 25:17-18)

यहां जिन लोगों को पूजा गया कहा गया है, वे स्पष्ट रूप से, संत और पवित्र लोग हैं, जबकि उनकी पूजा का मतलब है कुछ गुणों में विश्वास करना जो वास्तव में दिव्य हैं और दूर किसी की प्रार्थनाओं को सुनने और स्वीकार करने में सक्षम होने में, और उनके लिए ऐसे

तरीके से सम्मान दिखाना पूजा के बराबर है।

(vii) और जिस दिन अल्लाह उन सभी को एक साथ इकट्ठा करेगा, और फरिश्तों से कहेगा: "क्या तुम वे हो जिनकी पूजा की गई थी?" और वे जवाब देंगे, "आपको महिमा उनसे हमारा क्या लेना-देना? हम अपने रक्षक के रूप में आपको मानते हैं।" (कुरान 34:40,41)

यहां फरिश्तों की 'इबादत' का मतलब है उनकी पूजा, जिस उद्देश्य के लिए उनकी मूर्तियां पूजा स्थलों में रखी गई थीं, और उन्हें प्रसन्न करने और उनके पक्ष जीतने और सांसारिक मामलों में उनकी मदद प्राप्त करने की उम्मीद में विभिन्न पूजा कार्य किए गए थे।

(viii) और वे अल्लाह के अलावा, उन लोगों की पूजा करते थे जिनके पास उन्हें हानि या लाभ करने की शक्ति नहीं थी, और कहते थे, "ये अल्लाह के साथ हमारे मध्यस्थ हैं।" (कुरान 10:18)

(ix) और जिन लोगों ने अल्लाह के अलावा दूसरों को अपने सहायक के रूप में लिया है, और कहते हैं: "हम उनकी ओर पूजा के कार्य नहीं करते सिवाय इसके कि वे हमें अल्लाह के निकट लाते हैं।" (कुरान 39:3)

यहां भी विशेष पूजा कार्य इबादत के बराबर हैं, और जिस विशेष तरीके से यह किया गया वह भी संकेतित है।

उपरोक्त सभी उदाहरण 'इबादत' शब्द (या इसके एक या अधिक व्युत्पन्नों) के उपयोग को तीन अर्थों में से एक या दूसरे में दर्शाते हैं, और अब हमें शब्द के व्यापक उपयोग के कुछ उदाहरण देने हैं, तीनों को शामिल करते हुए। लेकिन इससे पहले कि हम ऐसा करें, एक बिंदु के बारे में स्पष्ट होना वांछनीय लगता है। ऊपर उद्धृत सभी आयतों में, अल्लाह के अलावा अन्य की पूजा का संदर्भ है। जहां पूजा ('इबादत') बंधन और समर्पण को दर्शाती है, जिनकी पूजा की जाती है वे हैं, या तो शैतान, या अल्लाह के खिलाफ वे विद्रोही जो तागूत बन गए हैं और जो, लोगों को अल्लाह को अपनी आज्ञाकारिता देने के बजाय, इसे अपने लिए विशेष बनाते हैं; या वे नेता (चाहे राजनीतिक या धार्मिक) जो कुरान के आदेशों की अनदेखी करते हैं और लोगों को अपने द्वारा तैयार किए गए तरीकों का पालन करवाते हैं [जैसे, "केमलिज्म" और "पंचशील" के समर्थक, दो विधर्मी धर्मनिरपेक्ष अवधारणाएं, दोनों को इस्लाम के लिए खुले तौर पर प्राथमिकता दी गई, शुद्ध मुसलमानों को सताया गया और यहां तक कि देश के दुश्मनों के रूप में भी बदनाम किया गया। अबू असद।]। जहां शब्द वास्तव में पूजा का मतलब है - यानी, पूजा के विभिन्न अनुष्ठानों का प्रदर्शन, आदि। - जिनकी पूजा की जाती है वे या तो संत या अन्य पवित्र लोग होते हैं, या नबी जो अपनी शिक्षाओं के विपरीत विभिन्न डिग्री में देवत्व की स्थिति तक उठाए गए; या फरिश्ते या जिन्न जो, एक गलत धारणा के माध्यम से, दैवत्व में हिस्सा होने के लिए माने जाते थे; या मूर्तियां या काल्पनिक शक्तियां या अन्य भौतिक प्रतिनिधित्व जो शैतान के संकेतों के माध्यम से पूजा की वस्तुएं बन गईं। पवित्र कुरान इन सभी देवताओं या पूजा की वस्तुओं को झूठा घोषित करता है, और उनकी 'पूजा' को गलत, चाहे वह बंधन, या आज्ञाकारिता, या पूजा के संस्कार के वास्तविक पालन के बराबर हो। सभी, कुरान जोर देता है, अल्लाह की रचनाएं और उसके दास हैं। उनके पास किसी भी प्रकार की पूजा दिए जाने का कोई अधिकार नहीं है, न ही यह पूजा निराशा और अवमानना के अलावा कुछ भी उत्पन्न करती है। केवल अल्लाह सभी का रब है, चाहे वे ये देवता हों या बाकी सृष्टि, और केवल उसी के पास सारी शक्ति और अधिकार है और, इसलिए, केवल वही शब्द के किसी भी अर्थ में पूजा के योग्य है:

(i) वास्तव में जिन्हें तुम पूजते हो वे तुम्हारे जैसे अल्लाह की रचनाएं हैं, इसलिए उन्हें बुलाओ, और उन्हें तुम्हें जवाब देने दो (अर्थात, तुम्हारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करो), यदि तुम सही हो।" ...और जिन्हें तुम उसके अलावा बुलाते हो, वे न तो तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न ही (उस मामले के लिए) खुद की भी। (कुरान 7:194,197)

(ii) और वे कहते हैं कि रहमान (दया का अल्लाह) ने अब स्वयं एक पुत्र लिया है। ऐसी बात से वह बहुत ऊपर है! वे (अनुमानित पुत्र), वास्तव में, उसकी रचनाएं हैं जिन्हें उसने सम्मानित किया है। (और फिर भी, इस सम्मान के बावजूद) वे उसके सामने कोई भी सबमिशन करने के लिए अपने आप पर अपना मुंह खोलने की हिम्मत नहीं करते। वे केवल वही करते हैं जो वह आदेश देता है। वह जानता है कि उनके लिए क्या दृश्यमान है, और क्या उनसे छिपा हुआ है। वे किसी के पक्ष में (बिल्कुल) उसके साथ मध्यस्थता नहीं कर सकते सिवाय इसके कि वह स्वयं किसी भी मध्यस्थता को स्वीकार करना चाहे। और वे लगातार उसकी भय में हैं। (कुरान 21:26-28)

(iii) और उन्होंने फरिश्तों को देवी बनाया है, जो वास्तव में अर-रहमान की रचनाएं हैं, दयालु अल्लाह। (कुरान 43:19)

(iv) और उन्होंने अल्लाह और जिन्नों के बीच कुछ रक्त संबंध मान लिया है, हालांकि जिन्न, अपने लिए जानते हैं कि उन्हें एक दिन अपने आचरण के लिए हिसाब देने के लिए उसके सामने उपस्थित होना होगा। (कुरान 37:158)

(v) न तो ईसा ने अल्लाह का दास होना अपनी गरिमा से नीचे माना, न ही फरिश्ते; और जो कोई भी अल्लाह के प्रति अपने आप को बंधन में देना अपने से नीचे मानता है, (तो वह उससे कहां बच सकता है, और) वह उन सभी को अपने पास इकट्ठा करेगा। (कुरान 4:172)

(vi) सूरज और चांद दोनों (बिल्कुल) गणना किए गए पाठ्यक्रमों का पालन करते हैं; और पौधे और पेड़ दोनों (समान रूप से) अल्लाह (उनके निर्माता) के प्रति आराधना और समर्पण में झुकते हैं। (कुरान 55:5-6)

(vii) सात आकाश और पृथ्वी, और उनमें रहने वाले सभी जीव, उसकी महिमा की घोषणा करते हैं; कोई भी चीज नहीं है जो उसकी प्रशंसा का उत्सव नहीं मनाती, सिवाय इसके कि तुम इसे समझते नहीं हो। (कुरान 17:44)

(viii) और उसके हैं आकाशों और पृथ्वी में सभी प्राणी, और सभी उसके आदेशों के अधीन हैं। (कुरान 30:26)

(ix) और कोई भी प्राणी नहीं है जो चलता है लेकिन उसने उसके अग्रभाग को पकड़ा है (यानी, उस पर पूर्ण नियंत्रण)। (कुरान 11:56)

(x) आकाशों और पृथ्वी में एक भी प्राणी नहीं है जो (अल्लाह) अत्यंत कृपालु के पास बंधित दास के रूप में नहीं आएगा; वह उन (सभी) का हिसाब लेता है, और उन्हें (सभी को) बिल्कुल गिना है। और उनमें से हर एक न्याय के दिन अकेले उसके पास आएगा। (कुरान 19:93-95)

(xi) कहो (हे नबी): "हे अल्लाह! शक्ति (और शासन) के रब, तुम जिसे चाहो शक्ति प्रदान करते हो, और जिससे चाहो शक्ति छीन लेते हो; तुम जिसे चाहो सम्मान से संपन्न करते हो, और जिसे चाहो नीचे लाते हो। तुम्हारे हाथ में सारा अच्छा है [अर्थात, कोई भी अच्छा किसी भी प्राणी के पास नहीं आ सकता जब तक अल्लाह ऐसा नहीं चाहता। अबू असद]। वास्तव में, तुम्हारे पास हर चीज पर (सभी) शक्ति है। (कुरान 3:26)

इस प्रकार स्पष्ट रूप से स्पष्ट करने के बाद कि अल्लाह के अलावा किसी भी रूप में जिनकी पूजा की गई थी या की जा रही है वे उसकी रचनाएं और दास के अलावा कुछ नहीं हैं और उनकी अपनी कोई शक्ति या अधिकार बिल्कुल नहीं है, कुरान सभी मनुष्यों और जिन्नों से मांग करता है कि 'इबादत' अवश्य, चाहे वह किसी भी रूप में हो, केवल अल्लाह के लिए आरक्षित होनी चाहिए। सभी बंधन, समर्पण और पूजा केवल उसके लिए या उसके बारे में होनी चाहिए, और किसी और के लिए इनकी थोड़ी सी भी समानता नहीं होनी चाहिए:

(i) और हमने हर लोगों के लिए एक दूत भेजा कि वे अल्लाह को अपनी 'इबादत' दें और तागूत को देने से बचें। (कुरान 16:36)

(ii) उन लोगों के लिए अच्छी खबर है जिन्होंने तागूत की 'इबादत' से दूर हो गए और इसके बजाय अल्लाह की ओर मुड़ गए। (कुरान 39:17)

(iii) क्या मैंने तुम पर आदेश नहीं दिया था, हे आदम के पुत्रो, कि तुम शैतान को अपनी 'इबादत' न दो, क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है, बल्कि इसके बजाय मुझे दो और यही सीधा रास्ता है? (कुरान 36:60-61)

(iv) उन्होंने अपने विद्वानों और प्रशंसाओं को रब बनाया, हालांकि उन्हें केवल अल्लाह को ही अपनी 'इबादत' देने का आदेश दिया गया था। (कुरान 9:31)

(v) हे तुम जो विश्वास करते हो! यदि तुमने वास्तव में अपनी 'इबादत' हमारे लिए विशेष बनाई है, तो हमने तुम्हें जो स्वच्छ और अच्छी चीजें दी हैं उन्हें बिना हिचकिचाहट के खाओ, और अल्लाह के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करो। (कुरान 2:172)

इन आयतों में 'इबादत' जो केवल अल्लाह के लिए आरक्षित होने का आदेश दिया गया है वह है जो बंधन या दासता और समर्पण और आज्ञाकारिता के बराबर है, और निहितार्थ स्पष्ट रूप से है कि लोगों को बताया जा रहा है कि तागूत को, शैतान को, पुजारियों और रब्बियों को, और पिताओं और पूर्वजों को अपना समर्पण और आज्ञाकारिता देने से बचें, और इसके बजाय केवल अल्लाह को दें:

(i) कहो (हे नबी): "मेरे लिए मना है मेरे रब से स्पष्ट संकेत मिल चुके हैं और मुझे सभी लोकों के रब की इच्छा के सामने झुकने का आदेश दिया गया है, इसलिए मैं उन लोगों को अपनी 'इबादत' नहीं दे सकता जिन्हें तुम अल्लाह के बजाय बुलाते हो।" (कुरान 40:66)

(ii) और तुम्हारे रब ने कहा है: 'मुझे पुकारो, और मैं तुम्हारी प्रार्थना सुनूंगा [इसका मतलब यह नहीं है कि सभी प्रार्थनाएं आवश्यक रूप से उस तरह से स्वीकार की जाएंगी जिस तरह से कोई चाहता है। पवित्र नबी ने एक अवसर पर यह कहा था कि कोई भी प्रार्थना कभी बर्बाद नहीं होती। अल्लाह सर्वशक्तिमान या तो इसे स्वीकार करता है, या वह कुछ बेहतर प्रदान करता है - कुछ समय बाद हो सकता है - या वह इसके बजाय कुछ नुकसान या आपदा को टालता है। हालांकि, यह समझा जाना चाहिए, बिंदु को किसी तर्क की आवश्यकता नहीं है कि प्रार्थना कुछ अच्छे के लिए होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी गुमराह मूर्ख के लिए यह प्रार्थना करना कि अल्लाह उसे एक दोस्त की पत्नी को बहकाने या एक कालाबाजारी लेनदेन में भारी लाभ कमाने में सक्षम बनाए, यह निश्चित रूप से अधर्म की ऊंचाई होगी, आदि। और वह निश्चित रूप से अपनी प्रार्थना स्वीकार न करने के लिए अल्लाह के प्रति कृतघ्न महसूस करने का कोई अधिकार नहीं रख सकता। अबू असद।]- और जो मेरे आदेशों के खिलाफ जाते हैं, वे निश्चित रूप से नरक की (आग) में फेंक दिए जाएंगे।" (कुरान 40:60)

(iii) यह अल्लाह है, तुम सभी का रब। सारी शक्ति केवल उसकी है, और जिन्हें तुम उसके अलावा बुलाते हो, उनके पास कोई शक्ति नहीं है; यदि तुम उन्हें बुलाते हो, वे तुम्हारी प्रार्थना नहीं सुनते, और यदि वे सुन सकते तो वे जवाब नहीं दे पाते, और न्याय के दिन वे बस अल्लाह के साथ तुम्हारी संगति को अस्वीकार कर देंगे! (कुरान 35:13-14)

(iv) कहो (हे नबी): 'क्या तुम उन लोगों को 'इबादत' देते हो, अल्लाह के अलावा जिनके पास तुम्हें न हानि पहुंचाने की शक्ति है और न ही लाभ, (जबकि) केवल अल्लाह ही सर्व-श्रवण, सर्वज्ञ है।" (कुरान 5:76)

इन आयतों में पूजा के अर्थ में, अल्लाह के लिए 'इबादत' को विशेष बनाने पर जोर है, और इसका प्रमाण भी है कि किसी को प्रार्थनाएं भेजना भी 'इबादत' का एक कार्य है, जबकि ऊपर उद्धृत आयतों से पहले और बाद आने वाली आयतें उन अनुमानित देवताओं के बारे में बोलती हैं जिन्हें अल्लाह के साथ उसके रुबूबिय्यत में अलौकिक अर्थ में सह-भागीदार के रूप में माना जाता था। इसलिए कम से कम समझ रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह समझना मुश्किल नहीं होना चाहिए कि जहां भी कुरान अल्लाह की 'इबादत' के बारे में बोलता है, और यह संदर्भ से प्रतीत नहीं होता कि इसका उपयोग विशेष रूप से इसके तीन अलग-अलग अर्थों में से किसी एक या दूसरे में किया गया है, यह तीनों को शामिल करता है, अर्थात्, बंधन, समर्पण और पूजा, जैसे

(i) वास्तव में, मैं अल्लाह हूं; मेरे अलावा कोई इलाह नहीं है; इसलिए अपनी 'इबादत' मुझे (अकेले) दो। (कुरान 20:14)

(ii) यह अल्लाह है, तुम्हारा रब; उसके अलावा कोई इलाह नहीं है - जो कुछ भी मौजूद है उसका निर्माता; इसलिए अपनी 'इबादत' उसे (अकेले) दो, और वही है जो हर चीज और उसकी जरूरतों का ध्यान रखता है। (कुरान 6:102)

(iii) कहो (हे नबी): "हे लोगो, यदि तुम संदेह में हो कि मेरा दीन क्या है, तो तुम्हारे लिए स्पष्ट हो कि मैं उन लोगों को अपनी 'इबादत' नहीं देता जो अल्लाह के अलावा तुम देते हो, मैं अपना अल्लाह को देता हूं, जो तुम्हें मृत्यु कारण बनता है, और मुझे (उस पर) विश्वासियों में से होने का आदेश दिया गया है।" (कुरान 10:104)

(iv) जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा अपनी 'इबादत' देते हो, वे तुम्हारे पूर्वजों और तुम स्वयं ने, झूठी धारणाओं के तहत, दैवत्व से निवेशित होने के लिए विश्वास करने के लिए आए हुए चीजें या प्राणी के अलावा कुछ नहीं हैं। अल्लाह ने स्वयं इसके लिए कोई प्रमाण नहीं भेजा है। केवल अल्लाह के पास सारी शक्ति और राज्य है। स्पष्ट रूप से उसने आदेश दिया है कि उसके अलावा किसी को भी कोई अपनी

'इबादत' नहीं दे सकता, और वही (अकेला) सीधा रास्ता है। (कुरान 12:40)

(v) और केवल अल्लाह ही मनुष्य द्वारा अनदेखी वास्तविकताओं को जानता है; केवल उसी के पास अंतिम वितरण निहित है; इसलिए अपनी 'इबादत' उसे दो, और केवल उसी पर अपना भरोसा रखो। (कुरान 11:123)

(vi) उसी के हैं (अकेले) वह सब जो हमारे सामने है या हमारे पीछे या बीच में; न ही तुम्हारा रब स्मृति की चूक का शिकार है; वह आकाशों और पृथ्वी और जो कुछ भी बीच में है उसका रब है; इसलिए केवल उसी को अपनी इबादत दो, और केवल ऐसी 'इबादत' में दृढ़ रहो। (कुरान 19:64-65)

(vii) तो, जो कोई भी अपने रब से मिलना चाहता है, तो उसे पवित्र कार्य करने दो, और अपने 'रब' की 'इबादत' को किसी अन्य के साथ न मिलाए। (कुरान 18:110)

इन आयतों में उपयोग किए गए 'इबादत' शब्द को पूजा, बंधन, या समर्पण के तीन अर्थों में से केवल किसी एक का होना लेने का थोड़ा सा भी कारण नहीं लगता है। वास्तव में, कुरान इस तरह की आयतों में अपने पूरे दावाह और इसके आयात को रखता है और, स्पष्ट रूप से, इसका पूरा दावाह इसके अलावा कुछ नहीं है कि हमारा बंधन, हमारा समर्पण, और हमारी पूजा सभी अल्लाह के लिए, पूरी तरह से और केवल होनी चाहिए। इसलिए, उपरोक्त आयतों में, शब्द के अर्थ को, तीन अर्थों में से केवल किसी एक तक सीमित करना कुरान के दावाह पर एक सीमा लगाने के बराबर है और इसका तार्किक परिणाम यह होगा कि जो लोग कुरानिक दावाह की ऐसी प्रतिबंधित समझ के साथ इस्लामी विश्वास को अपनाते हैं वे केवल इसके उपदेशों के साथ एक उप-मानक अनुपालन हासिल करने में सक्षम होंगे और अपने ईमान में दोषपूर्ण रहेंगे।